अमीर बच्चों में नेतृत्व के गुण

Elements of Leadership in rich children

टीम का हिस्सा नहीं, कप्तान बनें।

Don't be a part of the team but a leader of the team.

—राम बजाज

99.99,99 फीसदी शख्स जिन्दगी में कामयाबी और नाकामयाबी की बात तो करता है पर क्या इसे पाने के लिए सबसे अहम गुण नेतृत्व को अपने अन्दर तथा अपने बच्चों के आरम्भिक जीवन में विकसित कर पाता है? जवाब ना ही होगा। बच्चों और मनुष्य के स्वयं के जीवन में हर जगह जोखिम है, चुनौती है। मनुष्य तो आखिर मनुष्य रहा। 99.99,99 प्रतिशत इंसान न तो जोखिम उठाते हैं और ना ही अपने बच्चों को जोखिम उठाने की सलाह देते हैं। हम और हमारी संतानें जीवन में कई जिम्मेदारियों को निभाने में डरते हैं इसलिए कि उनको डरने का ही पाठ पढ़ाया जाता है। सुरक्षित नौकरी या फिर परम्परागत पुश्तैनी धन्धा। बस, इससे आगे कुछ नहीं। इसलिए 99.99,99 प्रतिशत इंसान गरीब ही रह जाते हैं। अनुभव हीनता और सफल नेतृत्व क्षमता न होने से वे अमीरी से वंचित रह जाते हैं।

आम इंसान भूल जाता है कि नेतृत्व की शुरुआत अपने व्यक्तिगत स्तर से होती है। आप कितने ही बड़े इंसान और अमीर बन जावें, मगर यह न भूलें कि आपने अपनी शुरुआत कहाँ से की थी। आप अमीर हैं तो इसलिए हैं कि आपको अमीरी के नेतृत्व की भाषा बचपन में ही सिखा दी गई थी। यह

तत्त्व की क्षमता हर व्यक्ति के पास जन्म से नहीं होती और न ही उसको पा सकता है। यह क्षमता बच्चों के जीवन के आरम्भिक वर्षों में विपरीत परिस्थितियों के झेलने के गुर सिखाने से प्राप्त की जा सकती है—जो सिर्फ माँ–बाप ही सिखलाते हैं।

अपनी औलाद को सिखलाएं कि नेतृत्व कभी भी भाग्य के भरोसे नहीं किया जा सकता। इसके लिए धैर्य, आत्मविश्वास और त्वरित निर्णय की क्षमता को विकसित करना ही अहम है। नेतृत्व में साहस को विकसित करने की कला का होना भी बहुत जरूरी है। यह तभी संभव है जब लीडर को ईमानदारी और दूसरों का विश्वास जीतने की कला आती हो। कामयाब लीडर अपने काम की योजना बनाता है और उस पर काम करता है। असफल लीडर व्यावहारिक और निश्चित योजनाओं के बिना केवल टोरे से काम चलाता है, वह उस जहाज की तरह होता है जिसमें राडार न हो। देर–सबेर वह चट्टानों से टकराकर चूर–चूर हो जावेगा। सफलता प्राप्त करने के लिए नेतृत्व का गुण होना आवश्यक है, जिससे किसी कार्य को करने की पहल कर सके, साथ ही उस पर नियंत्रण रखे और कार्य को बीच में न छोड़े।

दिल जीतने वाला नेतृत्व चाहिए, तोड़ने वाला नहीं

अमेरिका के वैज्ञानिक टामस एल्वा एडिसन, उद्योगपति व कार निर्माता हेनरी फोर्ड और प्रसिद्ध टायर निर्माता हार्वे फायरस्टोन, तीनों, में बड़ी गहरी दोस्ती थी। एक बार तीनों दोस्त वन–मौज मनाने किसी अनजान गाँव की ओर निकल पड़े जो शहर से सैकड़ों मील दूर एक पहाड़ी पर बसा हुआ था, जहाँ किसी प्रकार की दुकानें नहीं थी। खाना पकाने की तैयारी में मालूम पड़ा कि वे कुछ जरूरी बर्तन लाना भूल गए थे।

'अब बर्तन कहाँ से लाएंगे?' फायरस्टोन ने चिंतित स्वर में कहा।

'बर्तन का इंतजाम तो चुटकी बजाते ही हो जावेगा।' बड़े आत्मविश्वास के साथ हेनरी फोर्ड ने कहा।

'तो फौरन तुम दोनों बर्तन का इंतजाम करो, तब तक मैं लकड़ियाँ इकट्ठी करके आग जलाता हूँ।' कहकर फायरस्टोन आग जलाने जुट गए।

हेनरी फोर्ड और एडिसन गाँव की तरफ चल पड़े। 'मेरा नाम हैनरी फोर्ड है, मैं अमरीका का सबसे बड़ा उद्योगपति हूँ। तुम मुझे खाना बनाने के बर्तन दोगे तो मैं तुम्हारे बच्चों को अपनी कम्पनी में नौकरी दे दूँगा।' हेनरी फोर्ड ने गाँव वालों के सामने अपनी अमीरी की भाषा बोली।

गाँव वालों में किसी भी व्यक्ति ने हेनरी फोर्ड का नाम नहीं सुना था इसलिए वे बर्तन देने के लिए तैयार नहीं हुए। फोर्ड की असफलता के बाद एडीसन अपनी बुद्धि अजमाने लगे।

'मेरा नाम टामस है, मैं आपके गाँव में बिजली और बल्ब की व्यवस्था कर दूँगा, अगर आप हमें खाना पकाने के लिए बर्तन दे देंगे तो।'

एडिसन ने गाँव वालों को लालच देकर लुभाना चाहा। एडिसन, बिजली और बल्ब से अनजान, गाँव वालों ने एकमत होकर एडिसन के चमत्कारी प्रस्ताव को हँसी में उड़ाकर यह कह दिया कि शायद कोई पागल होगा।

हारकर एडिसन और फोर्ड, फायरस्टोन के पास लौट आए तो फायरस्टोन सब–कुछ समझ चुके थे कि यह दोनों महारथी अपनी कम्पनी का कुशल नेतृत्व तो कर सकते हैं परन्तु आम गाँव वालों के दिल जीतने के नेतृत्व में नाकाम हैं।

फायरस्टोन ने तुरन्त ही कार के पीछे स्टेपनी का टायर उतारकर, रस्सियों के सहारे, गाँव के बरगद के पेड़ में एक झूला बनाया। गाँव वाले भीड़ इकट्ठा कर फायरस्टोन के झूले को देख रहे थे जो उनके लिए एक अजूबा था। फायरस्टोन ने गाँव वालों से कहा, 'अगर तुम लोग खाना पकाने के लिए कुछ बर्तन मुझे दोगे तो यह झूला तुम्हारे बच्चों के लिए हमेशा के लिए दे दूँगा, साथ में खाना पकाने के बाद बर्तन भी लौटा दूँगा।' गाँव वाले बच्चों के खातिर फौरन बर्तन देने के साथ–साथ खाना बनाने के लिए भी सहयोग देने के लिए तैयार हो गए।

गाँव वालों को हाथों में बर्तन लाते देख फोर्ड और एडिसन को सहसा विश्वास नहीं हुआ। हार्वे तुमने यह जादू कैसे किया? दोनों एक साथ जोर–से चिल्लाए।

मेरे मित्रो, अगर दुनिया में किसी के दिल को जीतना है तो उनके नजरिए से नेतृत्व करना होगा। उनके नजरिए से सोचकर नेतृत्व करना होगा। अगर हम अपने नजरिए से सोचकर नेतृत्व करेंगे तो जीवन में थोड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा; जैसा तुम दोनों के साथ आज हुआ। हार्वे फायरस्टोन के नेतृत्व की सीख को दोनों मित्रों ने जीवन में पूर्णरूप से उतार लिया।

नेतृत्व की खासियत है—दूसरों की सहमति को सही तरीके से प्राप्त करने के साथ सदैव सकारात्मक सोच भी रखना, जिसकी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से माँ–बाप और शिक्षक की होती है। दुर्भाग्य यही है कि 99.99,99 फीसदी लोगों में इस तरह के नेतृत्व की कमी बचपन में ही महसूस होती है।

किसी भी कार्य में सफलता मिलना इस बात पर भी निर्भर करता है कि उस कार्य के प्रति आपका नजरिया कैसा है? सफल होने के लिए आशावादी नजरिया निहायत जरूरी है।

नेतृत्व का अर्थ क्या है?
What is the Meaning of Leadership ?

नेतृत्व वह नहीं है कि आप धाराप्रवाह भाषणों से जनता को प्रभावित करें अथवा प्रदर्शनों को संचालित करने का माद्दा रखें। बल्कि नेतृत्व वह गतिशील शक्ति है जो इंसान को अपने प्रत्येक सामूहिक प्रयास की सफलता के लिए प्रथम आवश्यकता को पूरी करे। कुशल नेतृत्व के अभाव में कोई भी इंसान व उसकी संस्था अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने में नाकामयाब है। वस्तुतः लीडरशिप अपने स्वयं व संस्थान के अस्तित्व के लिए एवं उसकी सफलता व विकास में कुशल नेतृत्व की भूमिका निभाना है। इसलिए प्रायः यहाँ तक कहा जाता है कि दुनिया में सफल इंसान वही होता है जो अपनी नेतृत्व–भूमिका को भलीभांति निभाता है। नेतृत्व एक नायाब गुण और कला है। इससे नेता अपने व्यवहार से अपने अनुयायियों को इस प्रकार प्रभावित करता है कि उनके स्वैच्छिक सहयोग व विश्वास के साथ अपने लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।